OCTOBER 2022, INDORE

COT COSMOS

WORLD Cotton DAY

7TH OCTOBER

CFTS

Cotton Fiber Testing Services

Delivering Accurate & Reliable Results

"FIRST"

Uster HVI 1000 Cotton Testing Laboratory in
Telangana & Andhra Pradesh

- Convenient location - 5 min walking distance from MGBS Bus Stand, Hyd
- Switzerland technology - Uster HVI 1000
- Testing according to global standards
- 12 hours of conditioning as per ICA Bremen Rules (Germany)
- Reports delivered through email and whatsapp

WANT ACCURATE AND DEPENDABLE RESULTS ?

Pickup services from MGBS Bus Stand, JBS Bus Stand and from private bus points

Cotton Fiber Testing Services (CFTS)
Flat No. 15-4-67, 4th Floor, Saraswati Complex, Old Bus Stand Road, Gowliguda Chaman, Hyderabad - 500012.

Phone Number: 91211 82226, 91210 49801 | Email ID: cfts.hyd@gmail.com

प्रिय पाठकों, नमस्कार,

कॉटन इंडस्ट्री में काम करते हुए मुझे 20 साल से ज्यादा समय हो चुका है। इस दौरान एक बात जिसने हमेशा मेरा ध्यान खींचा है वह है इस इंडस्ट्री का अस्त-व्यस्त डेटा कलेक्शन सिस्टम। स्मार्ट इंफो सर्विसेस (SIS) के जरिये मैंने इंडस्ट्री के डेटा सिस्टम को समन्यवयित करने का प्रयास किया है। यह एक छोटी सी कोशिश है कॉटन के हर व्यापारी तक सही जानकारी पहुंचाने की। SIS टीम की उपलब्धि है कि हमनें अथक प्रयासों के बाद कॉटन सीड, खल, कॉटन वॉश, रॉ कॉटन और कॉटन लिंट के फिजिकल प्राइज और एक्सचेंज मार्केट के कंपेरिजन का पिछले पांच सालों का पुख्ता डेटा तैयार किया है।

विजन
SIS के जरिये हमारा उद्देश्य है कॉटन के हर छोटे-बड़े व्यापारी को इंडस्ट्री से जुड़ी हर जरूरी जानकारी तुरंत उपलब्ध कराना। इसी उद्देश्य के चलते SIS अपने पाठकों के लिए एक साप्ताहिक समाचारपत्र "NEWSLETTER" और मासिक पत्रिका "COT COSMOS" भी लेकर आया है। हम आपको भरोसा दिलाते है कि सूचना क्रांति के इस दौर में कॉटन एंड टेक्सटाइल इंडस्ट्री से जुड़ी हर जरूरी जानकारी और सटिक खबरें आप तक पहुंचाते रहेंगे।
अंत में सभी कॉटन भाईयों और मित्रों को दिवाली की अग्रिम बधाई और नए कॉटन सीजन की ढ़ेरों शुभकामनाएं।

प्रवीण आर सिंघानिया
एमडी & सीईओ (SIS GROUP)

Dear Readers,

Greetings!!!!

It has been more than 20 years I am associated with cotton industry. And during all this while I have noticed one thing lacking very predominantly that is the haphazardly organized data. My long term goal behind establishing Smart Info Services was to get the data synchronised and integrated. And as they say "*Where is data smoke, there is business fire"*. We strive hard to serve with cotton and other related information authentically and with the highest of precision. We feel elated and proud to inform that we have left no stone unturned to build up a robust database of physical rates and exchange market updates of cotton seed, Khal, cotton wash, raw cotton and cotton lint.
Vision
Our primary objective at SIS is to cater the most updated and relevant information to the clients on immediate basis. And, thus in the sequence SIS has launched its weekly bulletin NEWSLETTER and monthly magazine COT COSMOS. We assure you to deliver most accurate and desired sets of information in the coming times.

Meanwhile, I extend my heartfelt wishes for WORLD COTTON DAY and upcoming cotton season and a very HAPPY DIWALI in advance.

PRAVEEN R SINGHANIA
MD and CEO (SIS Group)

The changing dynamics of :

SPINNING INDUSTRY

ZULFIKER ALI HAIDER
(CEO, Jaideep Textile)

In the present scenario, many cotton spinning mills have stopped production completely and it is likely to continue if cotton prices are not reduced.

It is important for all of us to know about the reason for such pathetic situation of textile mills. It is nothing but due to the non availability of cotton fibres at optimum rate, whatever the reason of shortage maybe.

State and central textile ministers must take some initiative to keep sufficient stock of cotton fibres and to deliver the mills at affordable rates after government subsidy. Without government intervention nothing is going to be resolved. Also, government is suffering as well due to non productivity of mills. Government must form laws to avoid this situation in future.

Some mills are stopped due to their own reasons such as conventional machines, no advancement in technologies, low productivity, poor quality, poor sales, etc.

Hence, a few actions to be carried out by mills personnel to improve the productivity, quality and profitability as follows:-

a) Modernisation/ Upgradation of machines.
b) Organic/BCI/PSCP yarn production.
c) Production of compact yarn.
d) Lycra, slub and other value added yarn to introduce.

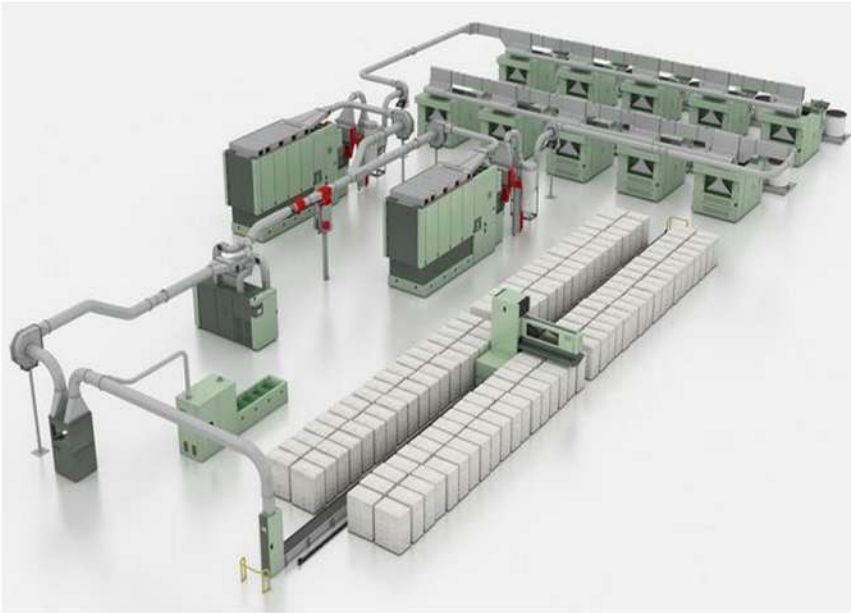

All are waiting for a good time for cotton spinning industries and it will come soon but we must remember that such situation must not be created again by employing our joint efforts with government authorities.

Truth in Spinning

Many mill owners assume that cheaper cotton can reduce the cost of raw material and ultimately generate more profit from finished goods. Such assumptions lead mills to wrong direction. It affects a lot in various ways:-

(a) Less yarn realisation
(b) Poor quality
(c) Less productivity
(d) Higher UKG
(e) Increase in market complains.

Such things will occur if cotton of poor quality is taken into process. Such as

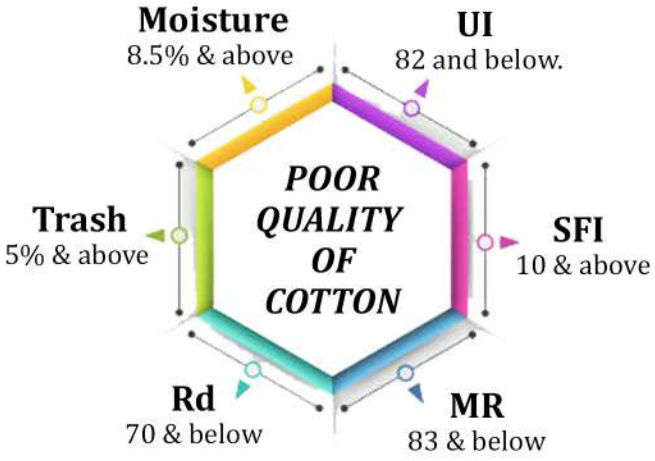

Based on my 37 years of experience I assume that if rich cotton purchased of below specifications:-

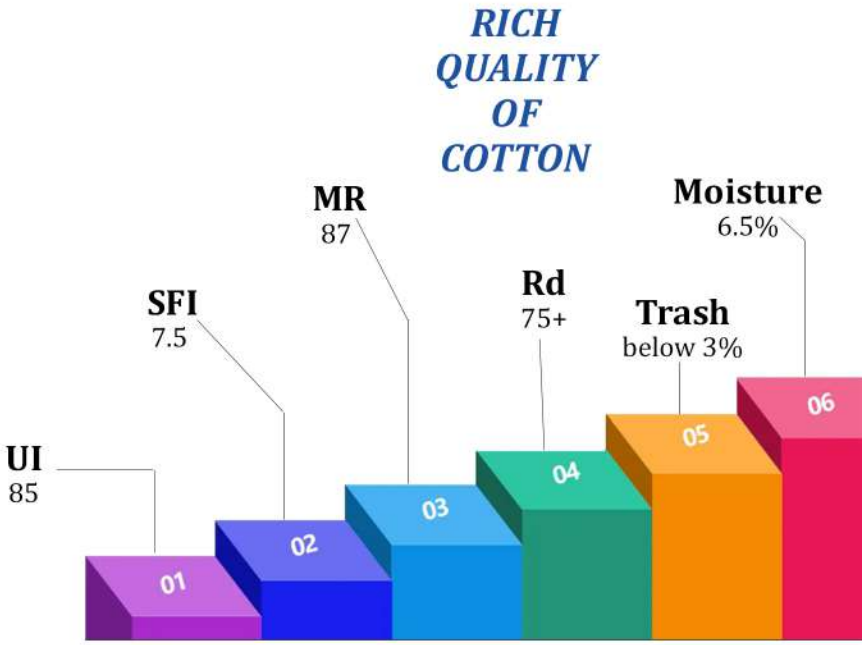

Mill owners must take above mentioned points into consideration to avoid the loss and consequently the closure of the mill.

Productivity, Quality, UKG, & Realisation, will certainly improve. Based on (50,000 ring spindles) calculation, total profit will increase by 1 Cr Rupees per month, if rich cotton used.

मंडी फीस के दबाव के चलते
एमपी की जिनिंग इंडस्ट्री कर रही माइग्रेशन

मेरी शुरूआत

मेरे पापा किसान होने के साथ साथ अनाज के आड़तिये और किराना का काम भी किया करते थे। काम के दौरान कई अनाज फैक्ट्रीयो और ऑयल मिल्स में जाया करते थे। एक दिन पापा और मां का फोन आया कि तू अपनी पढ़ाई पूरी करके वापस गांव आजा, एक छोटी सी ऑइल मिल डालने का मेरा सपना है। उस वक्त 3 भाइयों में सबसे छोटा मैं अरब देश कुवैत में इंटर्नशिप कर रहा था। पापा और परिवार के सपने को पूरा करने की इच्छा लेकर मैं विदेश के बड़े जॉब ऑफर को छोड़कर अपने गांव वापस आया। ऑइल फैक्ट्री की शुरूआत करने के दौरान मैंने खेतिया क्षेत्र में कॉटन में अपार संभावनाएं देखी। पापा मम्मी के साथ दोनों बड़े भाइयों ने बहोत विश्वास किया और फिर जिनिंग इंडस्ट्री को करीब से समझने के लिए 40-50 फैक्ट्रियों में टेक्नोलॉजी और वर्क कल्चर को समझने के लिए मेहनत की और फाइनली 2012-13 में श्री बालाजी कॉटन के नाम से हमने अपना मेन्युअल प्लांट शुरू किया। 1 महीने बाद ही व्यवसाय की गंभीर चुनौतियों को देखकर हमने प्लांट को बैंक की मदद से ऑटोमेटिक करने का बड़ा निर्णय लिया । अभी हमारी फैक्ट्री में 18 डीआर है और क्षमता 22 हजार बेल्स की है। नए सीजन वर्ष 2022-23 में हम 28 डीआर के साथ 40 हजार बेल्स का प्रोडक्शन करने की तैयारी कर चुके है।

मेरा आदर्श

इस अवसर पर 2 बेटियों के पिता अमित ने बताया कि मेरे पापा श्रीगजानंद जी मालवीया और परिवार ने मुझे संस्कारों को महत्व देना और अच्छा व्यवहार करना सीखाया है। वे हमेशा कहा करते है कि इंसान अपने व्यवहार से ही आगे बढ़ने के द्वार खोल पाता है। उनकी यह सीख मेरे जीवन का हिस्सा है। मैं दूसरों को मान देता हूं, इसी वजह से लोगों से सम्मान भी पाता हूं। मजबूती से डिसिजन लेने की क्षमता भी मुझे पापा से ही विरासत में मिली है। पापा की इन्हीं सीखों का नतीजा है कि आज मुझे एसोसिशन के गणमान्य सदस्यों ने अध्यक्ष पद के काबिल समझा है। और मैं हर संभव प्रयास करूंगा कि इस जिम्मेदारी को भलीभांति निभा सकूं।

मध्यप्रदेश के जिनर्स के लिए मंडी फीस एक बहुत बड़ी समस्या बनी हुई है। बड़ी हुई फीस की वजह से ही प्रदेश के कई कॉटन स्टेशंस की जिनिंग इंडस्ट्रीयां माइग्रेट होकर पड़ोसी राज्यों में जा रही है। पिछले कुछ सालों में सेंधवा स्टेशन की बहुत सी इंडस्ट्रीयां माइग्रेट हो चुकी है। खेतिया भी महाराष्ट्र की बॉर्डर पर है। और मध्यप्रदेश में महाराष्ट्र की तुलना में रॉ कॉटन पर तीगुनी मंडी फीस ली जा रही है। यही वजह है कि, यहां कि भी 4 इंडस्ट्रीयां माइग्रेट हो चुकी है। आगे ऐसा ना हो इसके लिए हम लगातार सरकार से बात कर रहे है। मध्यप्रदेश कॉटन इंडस्ट्री से जुड़ी यह जानकारी एसआईएस के साथ शेयर की खेतिया कॉटन एसोसिएशन के अब तक के सबसे कम उम्र के युवा अध्यक्ष अमित कुमार मालवीया ने।

हाल ही में अमित को खेतिया कॉटन एसोसिएशन का अध्यक्ष चुना गया। उनकी इस उपलब्धि पर SIS की मीडिया टीम उनसे रूबरू हुई और उन्हें बधाई दी।

मेरा विजन

इस पद पर कार्य करते हुए मेरा विजन बहुत स्पष्ट है। मैं बिखरे हुए मोतियों को माला में पिरोना चाहता हूं जो की सोशियो इकनॉमिक कल्चर को प्रबंधित करते हुए होगा । व्यापारी और किसान के बीच की खाई को साझा हित के साथ खत्म करना ही मेरा मुख्य उद्देश्य है। इनके बीच की कम्युनिकेशन गैप को खत्म करना, मंडी फीस के मुद्दे को सुलझाना और व्यापारियों के हितों की रक्षा करना मेरी वर्क लिस्ट में सबसे ऊपर है। इसके अलावा एक अन्य काम जो बहुत महत्वपूर्ण है वह है खेतिया मंडी की सालाना कपास आवक को बढ़ाना । वर्तमान में यहां की सालाना आवक लगभग 1.5 से 1.75 लाख कॉटन बेल्स की है। मेरा प्रयास रहेगा कि आने वाले 2 से 3 सालों में इसे 3 लाख तक कर सकूं।

मेरा अनुमान

अपकमिंग सीजन में कपास की फसल को लेकर सबके अपने-अपने अनुमान है। जहां तक मेरी बात है तो मेरा मानना है कि नॉन इरीगेटेड लैंड्स के लिए जहां बुआई 15 जून से 15 जुलाई के बीच की गई है वहां के लिए अभी हो रही बारिश अमृत से कम नहीं है। हां, जिन क्षेत्रों में बुआई 1 मई से 15 जून के बीच हुई है वहां यह बारिश थोड़ा नुकसान पहुंचा सकती है। लेकिन सम्पूर्णता में देखे तो इस साल फसल पिछले साल की तुलना में बहुत अच्छी होगी और सबकुछ पक्ष में रहा तो भाव भी 7 से 8 हजार के बीच होने का अनुमान है। कुल मिलाकर नए कपास सीजन को लेकर सारी वैल्यू चैन काफी आशान्वित भी है और कपास तो सफेद सोना बनकर ही रहने वाली है । आने वाले सीजन के लिए सभी को शुभकामनाएं ।

अमित कुमार मालवीया

अध्यक्ष, खेतिया कॉटन एसोसिएशन,
सीईओ एवम को फाउंडर - श्री बालाजी कॉटन

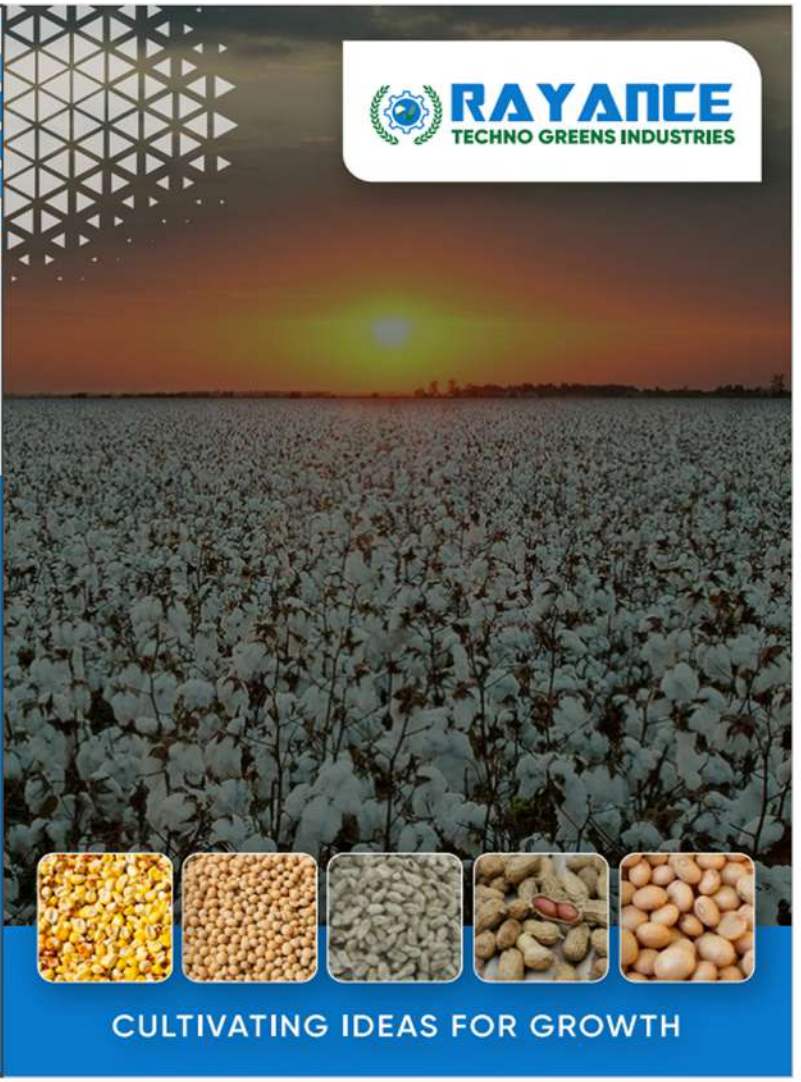

टेक्सटाइल इंडस्ट्री का लॉस मतलब

NATIONAL LOSS

रामकिशोर जी खंडेलवाल
(कॉटन जिनर ,नरखेड़ स्टेशन,महाराष्ट्र)

टेक्सटाइल इंडस्ट्री देश में करोड़ों लोगों को रोजगार प्रदान करती है। सरकार भी इस इंडस्ट्री में नए प्लांट लगाने वालों को अच्छी खासी सब्सिडी उपलब्ध कराती है। ऐसे में यदि इंडस्ट्री को लॉस होता है तो इसे नेशनल लॉस ही माना जाना चाहिए। यह कहना है महाराष्ट्र के नरखेड़ स्टेशन के प्रतिष्ठित कॉटन जिनर रामकिशोर जी खंडेलवाल का। उन्होंने एसआईएस से खास चर्चा के दौरान इंडस्ट्री से जुडी कई जरूरी बातें शेयर की।

उन्होंने बताया कि मैं पिछले 19 सालों से इस इंडस्ट्री में हूं लेकिन, जिस तरह की हडकंप कॉटन में पिछले 2 सालों में आई है वैसी आज तक नहीं देखी। एक दिन में कॉटन भाव में 1000 से 2000 रूपए तक का फर्क आ जाता है। इतने समय में तो एक जिनर रॉ कॉटन से कॉटन बेल भी तैयार नहीं कर पाता। यदि यह स्थिति नहीं सुधरी तो परिणाम गंभीर हो सकते हैं।

इस सीजन भी मुनाफा केवल उन्हीं जिनर्स और टेडर्स ने कमाया है जिन्होंने कपास को होल्ड करके रखा। बाकि रोजाना रॉ मटेरियल खरीदकर फैक्ट्री चलाने वालों को तो नुकसान ही हुआ है। वहीं मिल्स ने भी शुरूआत में तो पैसा कमाया लेकिन अब स्थिति यह हो गई है कि 24 घंटे चलने वाली मिल्स को 6 महीने के लिए बंद करना पड़ गया है। इससे यह स्पष्ट है कि हालात किसी भी सेक्टर के लिए अच्छे नहीं है।

इंडस्ट्री के जानकारों का यह कहना जरूर है कि इस बार क्रॉप अच्छी आएगी तो भाव भी कम होंगे। उम्मीद तो हमें भी यही है कि भाव पर अंकुश लगेगा। लेकिन, हकीकत यह है कि बारिश ज्यादा होने की वजह से बहुत जगह क्रॉप साइज छोटा रह गया है। यानी जिन पौधों में अब तक 100 से 125 फूल आ जाने चाहिए थे उनमें अब तक केवल 20 से 25 फूल ही आए है। और समस्या यह है कि ये फसल ठीक होने की स्थिति में भी नहीं हैं।

नरखेड़ क्षेत्र की जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि हमारे एरिया में औसतन 1 से 1.5 लाख कॉटन बेल्स का उत्पादन होता है। यहां 5 जिनिंग फैक्ट्री है जो प्रतिदिन लगभग 2000 गांठें बनाती है। यदि कोई हमारे क्षेत्र में नई जिनिंग डालने की इच्छा रखता है तो मेरा उसे सुझाव है कि अभी इंडस्ट्री में सेच्युरेशन का दौर है, स्थायित्व आने तक इंतजार करें फिर ही नया इनवेस्टमेंट करें।

सुझाव

- सरकार का मार्केट पर पूरा कंट्रोल होना चाहिए। सीजन के अंमित समय तक सरकारी एजेंसियों के पास इतना कॉटन स्टॉक होना चाहिए कि मार्केट में एकदम से माल की कमी ना हो जाए और भाव आसमान को ना छुएं।
- एमसीएक्स पर हैजिंग करने वाले लाख रूपये से ऊपर के भाव में भी माल हैजिंग कर रहे है जबकि वास्तविकता में माल है ही नहीं, तो बिकेगा कैसे। सरकार को ऐसा नियम बनाना चाहिए कि एमसीएक्स पर केवल वहीं लोग सौदे कर पाएंगें, जिनके पास फिजिकल माल हो। अन्य कोई भी यहां सौदे ना कर पाएं।

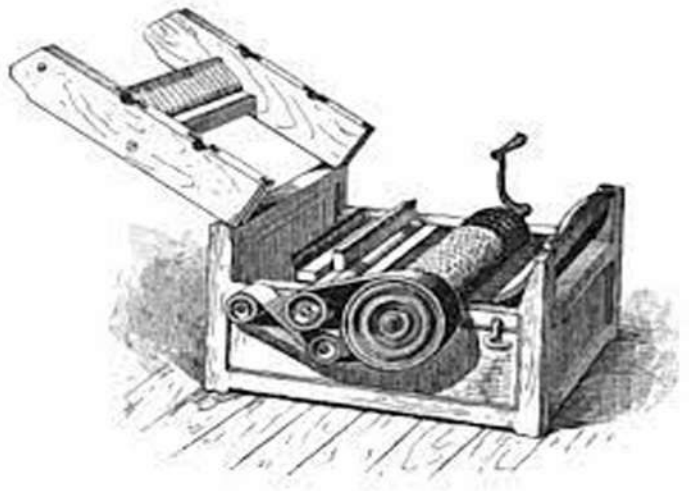

बिजनेस शुरू करने के लिए पैसा नहीं जुनून चाहिए होता है। इस बात को सही साबित किया है मल्कापुर के कॉटन जिनर सुभाषजी चौधरी ने। सुभाषजी ने बैलगाड़ी से कॉटन बेचने के काम से अपनी शुरूआत की थी और अपने हौसले के बल पर आज वे तीन जिनिंग यूनिट की कमान संभाले हुए है। अपनी सफलता का श्रेय वे अपने परिवार को देते है। उनका कहना है कि जिनिंग फैक्ट्री डालना मेरा सपना था लेकिन, यह सच साबित हुआ है तो केवल मेरे परिवार के सहयोग और विश्वास की वजह से।

काम को माना सर्वोपरी तो सफलता ने चूमे कदम

मेरा परिवार मेरा सहयोगी

2006 में जब हमनें जिनिंग में काम शुरू किया था तब हमारा डेली प्रोडक्शन 50 गांठ का था जो आज बढ़कर 1500 गांठ प्रतिदिन हो गया है। इन सभी यूनिट की जिम्मेदारी परिवार के ही सदस्यों के जिम्मे है। कारोबार में मेरे मुख्य सहयोगी मेरे दोनों भाई स्व श्यामसुंदर चौधरी, छोटे भाई राजू चौधरी, जीजाजी अशोक कुमार अग्रवाल, उनके बेटे गणेश अग्रवाल और भतीजे सुमित चौधरी है। इन्हीं के बल पर मैं अपना सचना सच कर पाया और आज इस मुकाम पर हूं। जिनिंग के साथ ही ट्रेडिंग भी हमारा प्रमुख कारोबार है। वर्तमान में हम महाराष्ट्र ,आंध्रप्रदेश, कर्नाटका, मध्यप्रदेश और तमिलनाडू में ट्रेडिंग कर रहे है। एक ऑयल मिल का सेटअप भी है। साथ ही स्पिनिंग में भी कदम रखा है। वर्तमान में लीज पर लेकर दो स्पिनिंग मिल्स चला रहे है। यदि सब ठीक रहा तो जल्द ही स्पिनंग मिल्स शुरू करने का सपना है।

कम नहीं थी चुनौतियां

सुभाषजी के भतीजे सुमित चौधरी ने बताया कि चाचाजी के जीवन में ऐसी कई चुनौतियां आई जो किसी दिग्गज व्यापारी को भी डगमगा सकती थी। किंतु, यह चाचाजी का हौसला ही था कि वे हर चुनौति का सामना कर उभरकर सामने आए। साल 2003 में महाराष्ट्र में कोऑपरेटिव मिल्स का दौर था उस दौरान उनका बहुत बड़ा पैमेंट रूक गया। बड़ी जद्दोजहद के बाद उन्हें 70से 80 प्रतिशत पैमेंट की रिकवरी हो पाई। दूसरी सबसे बड़ी चुनौति साल 2011 में आई जब एकदम से कॉटन का भाव 60 हजार से 30 हजार हो गया। उस दौरान भी उन्हें बड़े आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। बावजूद इसके उन्होंने अपनी हिम्मत नहीं खोई और आज वे हम सबकी हिम्मत बनकर खड़े है।

युवा पीढ़ी को सीख

सुमित बताते है कि चाचाजी ने हमेशा एथिकल बिजनेस करने की सीख दी हैं। काम के प्रति उनका जूनून इतना ज्यादा है कि वे 24 घंटे फैक्ट्री में ही रहते है केवल सप्ताअंत में 1 दिन के लिए ही घर आते है। वे सुबह 5 बजे से फैक्ट्री विजिट पर निकल जाते है।

महाराष्ट्र की बुलधाना डिस्टीक्ट के प्रतिष्ठित जिनर के रूप में पहचाने जाने वाले सुभाषजी ने अपने कॅरियर की शुरूआत रॉ कॉटन बेचने से की थी। शुरूआत में वे महाराष्ट्र से बैलगाड़ी में रॉ कॉटन लाकर एमपी में बेचा करते थे। वे बताते है कि साल 2000 में जब महाराष्ट्र से जिनिंग एंड प्रेसिंग रेस्ट्रिक्शन हटा तो कई व्यापारियों ने वहां जिनिंग फैक्ट्री डाली। मुझे जिनिंग इंडस्ट्री में आना तो था लेकिन मेरे पास इतना पैसा नहीं था कि मैं यह काम शुरू कर सकूं। इसलिए साल 2003 में मैंने जॉब वर्क पर काम करना शुरू किया। 2006-7 में 18 डीआर की एक जिनिंग फैक्ट्री से काम को गति दी। साल 2010 में एक जिनिंग मिल रिसेल में आई तो उसे खरीदकर अमित कॉट फाइबर की स्थापना की।

वर्तमान फर्म (जिनिंग फैक्ट्री) - अमित कॉट फाइबर,,(60 डीआर), मल्कापुर | नियोप्राइम, (40 डीआर), चिखली | ग्लोबल कॉटेक्स, (36 डीआर), सेलू पर्बनी | शिल्पा ट्रेडर्स देवलागंव, माही | निखिल ट्रेडर्स, खामगांव | सुमित, मल्कापुरस्पिनिंग मिल्स | सुमित एग्रोटेक (जलगांव और वरधा)

UPCOMING

CELEBRATING 100 YEARS OF COTTON ASSOCIATION OF INDIA
Established 1921

COTTON THE LIFELINE OF INDIA

CAI IN SERVICE OF THE NATION

October 17th - 18th 2022

Welcome Cocktails & Dinner
at Hotel Sahara Star, Mumbai
on Monday, 17th October 2022

Inauguration of CAI Centenary Year Celebrations
at Jasmine Banquet Hall-1, Jio World Convention Centre,
Mumbai on Tuesday, 18th October 2022

EVENTS
(SEPTEMBER' 2022)

TRADE FAIR

THE KNITTING AND STICHING SHOW

ADD - London, United kingdom.
DATE - 6th to 9th oct 2022
(Fabric, Yarn, Accessories)

INDIA INTERNATIONAL MEGA TRADE FAIR

ADD - Mumbai
DATE - 7th to 17th oct 2022
(Apparel, Fabric & Accessories)

YARN EXPO

ADD - Shanghai, China
DATE - 21st to 23rd ooct. 2022
(Fibre & Feedstock, Yarn)

YARN INDIA EXPO

ADD - Bhilwara, India
DATE - 6th to 8th oct 2022
(Apparel)

GARFAB-TX-2022

ADD - Hyderabad, India
DATE - 14th to 16th oct. 2022
(Apparel, Fibre, Feedstock, Machinery)

NEWS HIGHLIGHTS (SEPTEMBER' 2022)

- शेयर मार्केट निवेशकों के लिए गिरावट भरा रहा सितंबर का महीना, माह की शुरूआत से माह अंत तक में 2773 अंक घटकर सेंसेक्स पहुंचा 56255.75 के स्तर पर।

- करंसी में इस माह डॉलर का रहा बोलबाला, महीने के अंत तक 2.07 रूपये बढ़कर रूपए की कीमत हुई 81.60 रूपये।

- ऑल इंडिया फिजिकल कॉटन मार्केट में सितंबर माह में लगातार घटी कॉटन की कीमतें, माह अंत में नार्थ झोन में 2100 से 2500 रूपये प्रति मंड, सेंट्रल झोन में 10 से 24 हजार रूपये प्रति कैंडी और साउथ झोन में 9 से 13 हजार रूपए प्रति कैंडी तक घटे दाम।

- इस सीजन दुनिया पर मंडरा रहा वैश्विक कपास संकट, पाकिस्तान में बाढ़ से देश की 45 प्रतिशत कपास फसल बर्बाद होने की आशंका, जबकि अमेरिका में सूखे ने कपास कारोबार को किया प्रभावित।

- एशिया में बढ़ रहे है कपास प्रतिद्वंदी, जिसके चलते प्रमुख कपास आयातक चीन की स्थिति हो रही कमजोर।

- विदेशों के साथ देश के कुछ हिस्सों में भी कपास फसल को पहुंचा नुकसान, भारी बारिश के चलते तमिलनाडू के पेरम्बलुर जिले में 100 एकड़ से अधिक कपास और मक्का की खेती हुई नष्ट।

- दक्षिण भारत मिल्स एसोसिएशन साइमा ने नए कपास सीजन के लिए सरकार से शुल्क मुक्त आयात की करी मांग।

- बंग्लादेश की बैंक्स एलसी खोलने की इच्छुक नहीं, इससे कपड़ा मिलों को उठाना पड़ सकता है भारी नुकसान।

- चीन के कपास पर अमेरिका का प्रतिबंध, भारत की स्पिनिंग इंडस्टी के लिए बना मुसीबत।

- मंडी टैक्स के खिलाफ एकजुट हुए एपमपी के जिनर्स, 3 अक्टूबर को की हड़ताल।

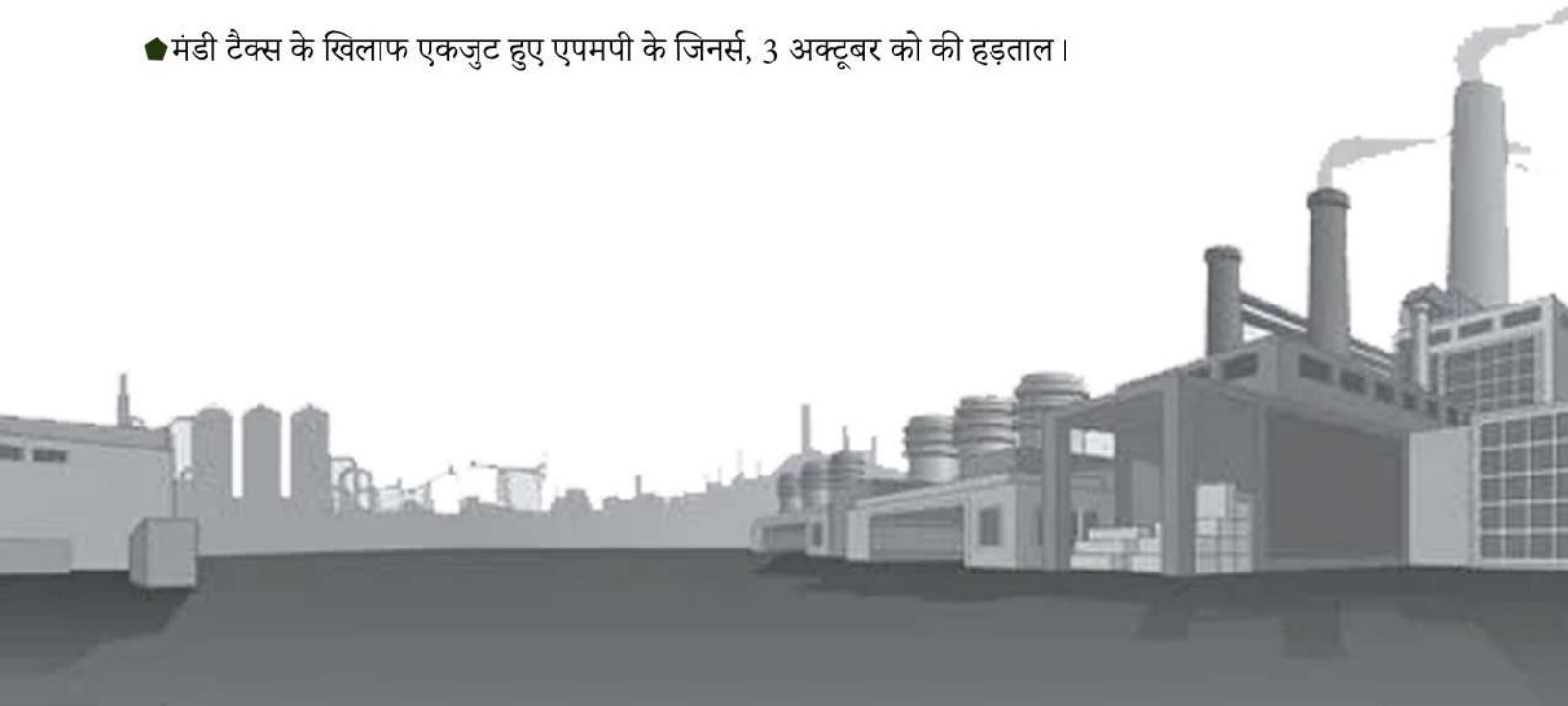

COTTON SEASON 2022-23

"An Overview of India's Cotton and Textile Industry."

Greetings for New Cotton season which will take place from Oct. 1st. With the lowest carry over stock of 2.82 million bales with great anticipation that India's Cotton crop would be more than 36.00 million Bales due to in time Monsoon and favorable weather which needs hence with to continue with bright sunshine. In view of the above it is expected that this year availability of Cotton and its quality will boost up the Textile Industry as a whole.

(Retired Vice-President (Cotton) of WELSPUN INDIA LTD.)

During last year (2021-22)

Textile Industry has faced very critical situations on three fronts

1- Crop (Quantity) wise 30.00 Million Bales,
2- Quality Wise
3- Hike in price with support of NCDX, MCX and speculators.

As a result industry has faced disparity of yarn as well as decreasing prices of end products & made ups.

By this drawback most of the Textile units curtail their production and some of the mills stopped their production from March 2022 onwards.

This phase has been ended and the all new season will start from Nov. onwards.

Because Cotton season 2022-23 shall be started with confidence that India's Cotton crop would be excellent in all respects like Quality, quantity and parity to Ginning Mills with the profitability of Textile Industry also.

Apart from the above, ***it is reported that Pakistan Crop has damaged by 30% about 4.00 Million Bales (Total loss) due to heavy rains and floods***. Similarly our competitor China has faced draught and flood in some area of Cotton belt and hence will decreased their production but they have Sizable carryover stocks and their cotton prices are cheaper than rest of the world price so our Textile Industry is having a competitor in International market.

Moreover, rest of the world is worried about Pima Cotton production which is being reduced by 50% as against 7.00 lakh bales during cotton season 2021-22. It is also assumed that this year (2022-23) Pima crop will remain near about 3.00 Lakh bales

However, this year Egypt Cotton planted Area has increased almost more than double ***(1, 30,000)*** and expected that the production of Egypt Cotton would be ***4.50 lakh bales (280kg)*** which may fulfill the gap of US Pima up to some extent.

At last but not least most probably the World Cotton production will remain same or ***+ - 0.5 to 1%*** as compared to last year.

Keeping in view of the above and favorable cotton Crop conditions I am quite hopeful and confident that the Cotton Trade as well as Textile Industry will be "Inform" again keeping in mind that Cotton prices will move between ***105-110 USC/lb.up to Dec.***

इस साल सफेद सोने से चमकेगा कर्नाटका

कपास की अच्छी कीमतों से खुश होकर किसान ने इस साल कपास की भरपूर बुआई की है। कर्नाटका में कुल फसल का ***80*** प्रतिशत कॉटन लगाया गया है। बीते साल यहां कपास ***14000*** रूपए तक बिका है। इस साल यदि कीमतें कम होती भी है तो भी ***8000*** रूपए से नीचे भाव जाने की उम्मीद नहीं है। यूं समझ लीजिए कि इस साल हमारा कर्नाटका सफेद सोने से चमकने को तैयार है। यह बात कहीं कर्नाटका के कॉटन ट्रेडर शैलेश कुमार ने।

शैलेश कुमार
(कॉटन ट्रेडर,रायचुर)

बेहतरीन कॉटन क्वालिटी

पिछले 6 सालों से कॉटन ट्रेडिंग कर रहे शैलेश ने कहा कि कर्नाटका में भारत की बेहतरीन क्वालिटी का कॉटन पाया जाता है। इस कॉटन की डिमांड देश में ही नहीं विदेशों में भी बहुत रहती है। यहां का ज्यादातर कॉटन कोयंबटूर जाता है और वहां से एक्सपोर्ट भी होता है। इसके अलावा महाराष्ट्र और गुजरात में भी यहां का कपास जाता है।

स्पिनिंग मिल्स की कमी

कर्नाटका में जिनिंग इंडस्ट्री तेजी से बढ़ रही है। जिले में अब तक 80 से ज्यादा फैक्ट्री लग चुकी है। पिछले 2 सालों में ही 10 नई फैक्ट्री लगाई गई है। इतनी बड़ी संख्या में फैक्ट्री लगाने की एक बड़ी वजह है सरकार द्वारा नई इंडस्ट्री लगाने पर 80 से 90 प्रतिशत तक की सब्सिडी मिलना। यहां स्पिनिंग मिल्स की कमी है। वर्तमान में यहां केवल 2 से 4 स्पिनिंग मिल्स मौजूद हैं।

अच्छी पैदावार की उम्मीद

कर्नाटका की मंडियों में आवक शुरू हो चुकी है लेकिन अभी नई क्रॉप आंध्र प्रदेश से आ रही है। कर्नाटका में नई फसल की शुरूआत में अभी 1 महीना और लगेगा क्योंकि यहां बुआई ही देर से होती है। सामान्यतः कर्नाटका में 15 जुलाई के बाद बोवनी की जाती है। अभी बोई गई फसल की पूरी तरह स्वस्थ है इसलिए उम्मीद है कि पैदावार भी अच्छी होगी। सामान्यतः यहां हर साल 8 लाख बेल्स की पैदावार होती है।

सुनहरा है भविष्य

हमारे प्रदेश में टेक्सटाइल इंडस्ट्री का भविष्य सुनहरा है। यहां की प्रमुख फसल ही कॉटन है। सरकार से हम पिछले कई सालों से कर्नाटका में स्पिनिंग इंडस्ट्री बढ़ाने की दिशा में कदम उठाने का अनुरोध कर रहे है। यदि सरकार इस दिशा में प्रयास करें और यहां स्पिनिंग मिल्स की संख्या बढ़े तो निश्चित ही प्रदेश में रोजगार बढ़ेगा और व्यापार में रिस्क भी कम होगी। पैमेंट प्रक्रिया भी आसान हो जाएगी।

Emergence of new trends in

Fashion and Textile Industry

(Recovery of fashion and textile industry post pandemic doesn't seem to be bed of roses as cotton rates have been on rapid rise since last fiscal year which also left the global and domestic fashion industry into a big time turmoil)

Fashion and apparel industry is one of the prominent industries of the world. In fact it is a major key value-creating industry contributing in the world economy. As per the Mc Kinsey stated in its International state report of 2017, global fashion industry come up as the seventh largest economy of the world. A popular magazine reports that out of top 20 DTC brands, 13 are fashion or apparel brands. By the end of this year, the global market is anticipated to touch 2.5 million USD.

Post pandemic the global fashion paradigms have been changed immensely. Varied technological advancements have also been adopted in the field. Customer preferences have also gone through a shift towards comfortable and breathable apparels while keeping the style and design at the centre of the process.

However, the pattern of buying the stuff and marketing it by the manufacturers has witnessed drastic changes.

Social media has a huge role to play in terms of revolutionizing the way fashion is being loved and consumed over the globe. The impact of influencer marketing will begin hitting the retail market significantly in near future.

E-commerce has been successful to establish an influential market for retail customers. Strategic marketing aided with correct detailing is making e-retail market dominating as compared to its counterpart.

But in the process of bouncing back to normal post two years of pandemic, the textile and fashion industry has to face many challenges in front of it.

The role and play of cotton as a raw material is also questionable being the most significant commodity of the industry. Cotton rates have been consistently spiked almost every fortnight. Many business deals were derailed as the sharp price hikes put an undue cease on timely and orderly delivery.

MAN MADE FIBRES AND YARNS

VISCOSE RAYON STAPLE FIBRES
(NT CRD / COMBO)

2018-19 - 78,572.88
2019-20 - 70,947.71
2020-21 - N.A

VISCOSE RAYON STAPLE FIBRES
(NT CRD / COMBO)

2018-19 - 41,897.17
2019-20 - 54,350.05
2020-21 - N.A

STAPLE FUBRES OF POLYESTER
(CMBD)

2018-19 - 90,400.09
2019-20 - 114.303.48
2020-21 - 83,009.95

STAPLE FUBRES OF POLYESTER
(NT CRD / CMBD)

2018-19 - 254,350.94
2019-20 - 284,552.50
2020-21 - 290,694.38

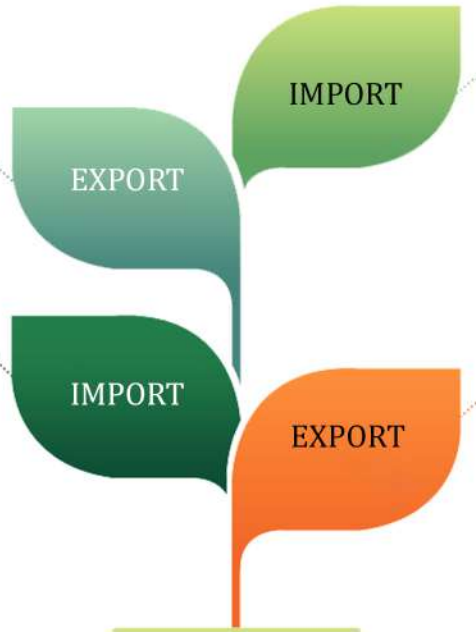

(QUANTITY IN THOUSANG KGS)

IMPORT **EXPORT**

And, this actually brings a whole lot of difference to the textile industry. Let us see how- Cotton accounts for about 65-70 % of the yarn cost; and a 35% rise in cotton prices makes yarn 20% more expensive. And as per the sources the prices of domestic cotton have crossed that of the global cotton by nearly 1,500- 2,000 per quintal. As a direct consequence, fashion firms are forced to go for blends, thus increasing demands for manmade fibres (MMF). This benefits the MMF business which already holds a two-third share of the global textile market. The demand for manmade fibre textiles is increasing all over the world as a substitute for cotton amidst the changes in global fashion industry.

With the exemption in import duty by the Indian government, a light of hope is anticipated for a brighter future of the industry. Also, the overall economy is improving and other socio-economic factors are in India's favour. And such circumstances will definitely aid fashion and textile industry to face global competition and escalate the high export growth in coming fiscal years.

SWATI AGRAWAL
(Blogger)

कपास मुहुर्त

सितंबर महीने मे देश में नए कपास की आवक शुरू हो गई। मध्यप्रदेश की खरगोन, अंजड़ और भीकनगांव मंडी, पंजाब की मलोट मंडी, हरियाणा की फतेहाबाद मंडी और राजस्थान की श्रीगंगानगर कपास मंडी में गणेशोत्सव के शुभ अवसर पर कई जिनर्स ने मुहुर्त सौदे किए। पेश है इन मुहुर्त सौदों की एक झलक-

GET IMPORT AND EXPORT DATA OF CHAPTER "52"

(COTTON, COTTON WASTE, YARN & OTHER TEXTILE GOODS)

For New Members :
1 Month Data : ***Rs. 1,000/-***
1 Yearly Data : ***Rs. 10,000/-***

For Existing Members :
1 Month Data : ***Rs. 750/-***
1 Yearly Data : ***Rs. 7,500/-***

For Historical Data (2019-2022)
Please contact - 9111677775

SIS CONNECT

For daily Market updates and all your textiles related issues **DOWNLOAD** our app now!!

INSTALL NOW

(Register now for free trial)

RAKSHA BHAGAT JAIN (EDITOR) / CONTACT - +91 - 74150 28064